Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 01-06-2020; Accepted: 15-06-2020; Published: 02-07-2020
Volume 1; Issue 2; 2020; Page No. 01-02

प्राचीन भारतीय कला में घट/कलश का महत्व

मंजू यादव
शोधार्थी (रिसर्च फैलो), महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, उदयन मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

मानव आदिकाल से ही प्रकृति के वशीभूत था। प्रकृति को सारी कलाओं की जननी माना गया है। प्रागैतिहासिक कला में पशु तथा वनस्पति जगत् का अधिक प्रतीकात्मक अंकन विद्यमान है। अतः मंगल कामना तथा सुरक्षा हेतु उसने वृक्ष, जल आदि की पूजा आरम्भ की ओर उनमें देवता का निवास माना। इस प्रकार प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर मानव कलाकार अपनी कला को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित हुआ। प्रकृति के मूल में जो ऊर्जा शक्ति है। वही मानव को प्रेरणा प्रदान करती है।

इस प्रकार सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की कल्पना शक्ति ही मनुष्य के लिए कला के रूप में सहायक सिद्ध हुई। कला का संबंध धर्म से है जिसके अंतर्गत मनुष्य ने धार्मिक कृत्यों को सजीव तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कला का आश्रय लिया गया। परिणामस्वरूप मूर्ति–पूजा के साथ–साथ अन्य प्रतीकों का निर्माण होने लगा। जिनमें मांगलिक प्रतीकों का भी महत्व है। मांगलिक प्रतीकों का मुख्य आधार उसकी धार्मिक भावना ही है। कला में ये प्रतीक किसी न किसी देवता से सम्बद्ध है। प्रतीकों के सान्निध्य से मूर्ति के विशेष भाव एवं गुण के प्रदर्शन का बोध होता है।

मूल शब्दः मानव आदिकाल, वशीभूत, सारी, प्रागैतिहासिक

प्रस्तावना: शोध क्षेत्र

इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध संकलन के द्वारा अध्ययन किया गया है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं और विद्वानों का मार्गदर्शन लिया गया है।

उद्देश्य

इसी प्रकार घट/कलश का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। हिन्दू धर्म में प्रत्येक पूजा का विशेष महत्व रहा है। चाहे वह उपनयन संस्कार हो या विवाह आदि अवसरों पर कलश रखने की प्रथा/परम्परा प्रचलित हो। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों में इसके स्थापन की विधि में अन्तर दिखाई देता है किन्तु इसमें निहित मूल भावना लगभग समान ही होती है।

समस्या

भारतीय कला ने एक–एक प्रतीक के रूप में इसकी उत्पत्ति के विषय में निश्चित काल का अभाव है। कुछ दार्शनिक इसे सुमेर से प्राप्त एक मुहर जिस पर कलश का अंकन मिलता है। इसी प्रकार का अंकन रूस और मिश्र में भी पाया गया है। परन्तु इनके घट की बनावट भारतीय कला से भिन्न है। कलश के रख–रखाव की समस्या आती है। जिसे संग्रहालय में सुरक्षित रखा जा सकता हैं। किन्तु आज उनके व्यवस्थित रखने उसे बार–बार दिखाने या सुरक्षित रखने की समस्या आती है।

समाधान

प्राचीन भारतीय कला हमें प्रतीकात्मक संकेत के साथ–साथ उनके लक्षणों से भी अवगत करती है। उसमें धर्म एवं दर्शन के रहस्य छिपे रहते है, जिस प्रकार घट/कलश सौभाग्य एवं पूर्णता का प्रतीक माना गया है। हडप्पा संस्कृति में मातृ–देवी की उपासना प्रचलित थी। यहाँ से एक गर्भिणी स्त्री के पेट को एक घट के समान दर्शाया गया है। अतः घट को पूर्णता के प्रतीक रूप में दर्शाया गया है। कालान्तर में इस अवधारणा ने जल का द्योतक माना और उस वट में स्त्री यक्षिणी या लक्ष्मी का वास माना जाता है। साहित्यों में घट को पूर्णता के रूप में दर्शाया गया है। इसके प्रमाण हमें भरहुत, सांची, अमरावती, नार्गाजुनी कोडां एवं मथुरा आदि कला में स्पष्ट दिखाई देते है।

भरहुतः से प्राप्त तीन शिला–फलक ऐसे है जिसमें पूर्णघट से निकले हुये कमल पुष्प पर लक्ष्मी स्थित है। घट गोल एवं सादे है किन्तु आधार के ऊपर कमल की पंखुड़ियाँ है। इन घटों/कलश का उत्कीर्णन छोटे से गोलवृत्त में बहुत ही कुशलतापूर्वक हुआ है।

संचीः सांची की कला में हमें पूर्ण कलश का अंकन अनेक स्थानों पर मिलता है। कहीं–कहीं घट सादे है तो कही घट अलंकृत है। इसके उत्तरी तोरण द्वार के पूर्वी भाग में अंकित घट उल्लेखनीय है।

टमरावतीः अमरावती की कला में घट अधिक विकसित रूप में मिलता है। घट गोल तथा अलंकृत है जिस प्रकार अमरावती स्तूप पर द्वार दर्शाया गया है उसी प्रकार घट को भी अलंकृत किया गया है। अमरावती–कला से प्राप्त घट संबंधी अलंकरण एवं व्यवस्था आधुनिक गुलदस्ते को सजाने की विधि से समानता रखता है।

मथुराः मथुरा की कला में पूर्ण घट का अधिक महत्व रहा था, क्योंकि यहाँ के कलाकारों ने इसे विभिन्न रूपों में उकेरा है। पूर्ण घट से निकलती हुई कमल लता, फूल, पक्षी, कली, पद्मासीन देवी श्री लक्ष्मी, पृष्ठ भाग पर हंस युग्म तथा दुग्दधारिणी, देवी आदि अनेक रूपों में दर्शाया गया है।

कपिशाः कपिशा के हाथी दाँत पर उत्कीर्ण यह घट भी महत्वपूर्ण है। इस कला में विशेषकर चुनरी का प्रयोग होता है, कलश पर नारियल और चुनरी का अंकन मिलता है।

सारनाथः सारनाथ की वेदिका पर उत्कीर्ण पूर्ण घट सादा है। घट के मुख से फूल, कली एवं पत्तियाँ निकलती हुई दर्शाया गया है।

कौशाम्बीः सारनाथ की अपेक्षाकृत कौशाम्बी के घट की भुजाएँ अधिक उभरी हुई है। घट एक सीढ़ीनुमा वेदी पर स्थित है। यह घट/कलश बहुत ही सादा है।

नागार्जुनीकोडः यहाँ के पूर्व कलशों को स्तूप–द्वारा दोनों ओर दिखाया गया है, जिनके मध्य में बुद्ध की खड़ी एवं बैठी प्रतिमा का अंकन भी है। अभी तक प्राप्त कलश किसी न किसी धातु अथवा पाषाण पर उत्कीर्ण है, किन्तु नागार्जुनीकोड से प्राप्त तीसरी शताब्दी का एक कलश प्राप्त हुआ है। यह चुना–पत्थर से निर्मित है। इस कलश पर यद्यपि कोई अलंकरण नहीं है परन्तु अत्यन्त सुडौल बना है जिसके मुख पर फूल पत्ती आदि रखने की परम्परा थी।

निष्कर्ष

अतः प्राचीन भारतीय कला में घट/कलश को जल के सार तत्व अथवा अमृत से युक्त माना गया है। इस प्रकार भारत की कला में भी कलश/घट बनाने की परम्परा प्राचीन काल से ही प्रचलित रही थी। कालान्तर में वास्तुकला में कलश का संबंध देव मंदिरों के साथ मिलता है। जहाँ यह वास्तु–पुरुष की कल्पना से संबंधित था। इसका कमल के साथ घनिष्ट संबंध दर्शाया गया है।

प्राचीन भारत के चार प्रमुख धर्मों (बौद्ध, जैन, वैष्णव, शैव) का अस्तित्व इन काल में था। बौद्ध एवं जैन धर्म का विकास अति प्राचीन काल में हुआ था, किन्तु वैष्णव और शैव धर्मों की अभिवृद्धि गुप्तकाल एवं उसके पश्चात् अनेकों शासनकाल में हुई। सातवी शताब्दी से ग्यारहवी शताब्दी तक दक्षिण भारत में अन्य धर्मों की अपेक्षा शैव धर्म को अधिक महत्व दिया। जिनमें दक्षिण के पल्लव, राष्ट्रकूट, चालुक्य आदि राजवंशों ने विशेषकर शैव धर्मों को अधिक महत्व दिया।

इस प्रकार भारत में विभिन्न धर्मों एवं शासनकाल में घट/कलश का महत्व बना रहा। वर्तमान में भी इसका महत्व यथावत बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. इण्डियन आर्ट एण्ड लेटर, खण्ड 10, संख्या 1, फलक 6, चित्र 13.
2. रायगोविन्द चन्द्र, चन्द्रभानु गुप्ता, अभिनंदन ग्रन्थ, पृ. 204.
3. द्रष्टव्य, कलोवन, एम. ई. इलस्ट्रेटड लंदन, न्यूज, मार्ग 27, 1937, पृ 519, चित्र 5.
4. रामचन्द्रराय, पी. आर., दि आर्ट ऑफ नागर्जुनीकोंड, फलक 14, पृ. 62.
5. ऋग्वेद 10,32.9.
6. मार्शल एण्ड फूशे, मॉनूमेन्ट्स ऑफ सांची, खण्ड 2, फलक 11, 16, 24.
7. स्मिथ जैन स्तूप एण्ड अदर एण्टीक्वीटीज ऑफ मथुरा, फलक 7.
8. रामचन्द्र राव, पी.आर. आर्ट ऑफ नार्गाजुनी कोंड रचना मद्रास, 1956, पृ. 62, फलक 14.